Merton (Functionalism)

इस सम्बन्ध में एक उल्लेखनीय बात यह है कि **मर्टन** ने अपने प्रकार्यवादी विश्लेषण की अवधारणा जिनसे ग्रहण की है वे सभी मानवशास्त्री हैं—जैसे **मैलिनोवस्की, रैडक्लिफब्राउन, क्लाइड क्लूखोन** आदि। **मर्टन** ने अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए सर्वप्रथम 'प्रकार्य' शब्द के निम्नलिखित **पाँच** विभिन्न अर्थों में अन्तर का उल्लेख किया है—(1) प्रकार्य सार्वजनकि उत्सव या सम्मेलन के रूप में, (2) प्रकार्य व्यवस्था के रूप में, (3) प्रकार्य एक सामाजिक पद पर आसीन व्यक्ति के कार्यकलाप के रूप में, (4) गणितशास्त्रीय प्रकार्य तथा (5) व्यवस्था को बनाए रखने में सहायक प्राणिशास्त्रीय या सामाजिक कार्य-प्रणालियों के रूप में प्रकार्य।

'प्रकार्य' के इन पाँचों अर्थों में **मर्टन** ने पाँचवें अर्थ को अपने सिद्धान्त के आधार के रूप में स्वीकार किया है। इसी आधार पर आपको प्रकार्यवादियों की श्रेणी में सम्मिलित किया जा सकता है और साथ ही आप पर उपरोक्त मानवशास्त्रियों के प्रभाव को दर्शाया जा सकता है।

मर्टन ने लिखा है कि केवल उपरोक्त पाँच अर्थों में ही नहीं अपितु अन्य एकाधिक अर्थों में भी 'प्रकार्य' शब्द का प्रयोग किया जाता है। अक्सर इस शब्द को 'उद्देश्य', 'प्रेरणा', 'प्राथमिक हित', 'लक्ष्य' आदि के विकल्प के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। परन्तु **मर्टन** के अनुसार, प्रकार्य को प्रातीतिक अनुभवों के रूप में समझना गलत होगा। सामाजिक प्रकार्यों के 'निरीक्षणीय वैषयिक परिणाम' होते हैं। उदाहरणार्थ, विवाह करने की प्रेरणाओं और विवाह के प्रकार्यों को एक मान लेना वास्तव में गलत होगा। उसी प्रकार वह कारण जोकि लोग अपने व्यवहार के लिए प्रस्तुत करते हैं तथा उनके व्यवहार के परिणाम, ये दोनों एक नहीं हैं। इसलिए **मर्टन** ने 'प्रकार्य' के दो आधारभूत अर्थों को स्वीकार किया है—(1) एक सावयवी व्यवस्था के रूप में प्रकार्य तथा (2) एक सावयवी व्यवस्था के अन्तर्गत किसी लक्ष्य, उद्देश्य आदि के परिणामों के रूप में प्रकार्य।

मर्टन ने लिखा है कि दूसरे प्रकार्यवादी विद्वान् प्रथमतः यह विश्वास करते हैं कि "प्रामाणिक सामाजिक कार्यकलाप या सांस्कृतिक इकाइयाँ सम्पूर्ण सामाजिक या सांस्कृतिक व्यवस्था के लिए प्रकार्यात्मक होती हैं; द्वितीयतः, इस प्रकार के सभी सामाजिक और सांस्कृतिक तत्त्व या इकाइयाँ समाजशास्त्रीय प्रकार्यों की पूर्ति करते हैं और तृतीयतः, ये तत्त्व इसीलिए **अपरिहार्य** होते हैं।" दूसरे शब्दों में, प्रकार्यवादी सिद्धान्तों की तीन आधारभूत मान्यताएँ हैं—(1) समस्त सामाजिक इकाइयाँ एक सामाजिक संरचना या व्यवस्था में कुछ सकारात्मक प्रकार्यों को करती हैं, (2) ये इकाइयाँ सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था के लिए प्रकार्य करती हैं, और (3) इनके इन प्रकार्यों के आधार पर ही सामाजिक संरचना

या व्यवस्था का अस्तित्व सम्भव होता है। अतः इकाइयों का प्रकार सामाजिक संरचना व व्यवस्था के अस्तित्व व निरन्तरता के लिए अनिवार्य है। **मर्टन** ने इन मान्यताओं को स्वीकार नहीं किया है। इनका कहना है कि प्रकार्यवादियों का यह दृष्टिकोण गलत है कि समस्त सामाजिक इकाइयाँ केवल प्रकार्य ही करती हैं और इस रूप में सामाजिक संरचना व व्यवस्था को बनाए रखने की दिशा में अपना योगदान करती ही हैं। इसके विपरीत, **मर्टन** के अनुसार, यह भी हो सकता है कि कुछ इकाइयाँ प्रकार्य के स्थान पर अकार्य करती हों और इस प्रकार सामाजिक संरचना व व्यवस्था को संगठित करने की दिशा में नहीं अपितु विघटित करने की दिशा में योगदान करें। अतः यह कहना गलत है कि सामाजिक इकाइयाँ सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था के लिए प्रकार्य करती हैं और उनका प्रकार्य सामाजिक संरचना व व्यवस्था के अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। **मर्टन** के अनुसार सामाजिक स्थिति यह है कि कुछ सामाजिक इकाइयों के कार्य यदि प्रकार्यात्मक होते हैं, तो कुछ इकाइयों के कार्य अंशतः अकार्यात्मक, कुछ के नकार्यात्मक और कुछ के पूर्णतया अकार्यात्मक। अतः सभी इकाइयों के कार्य सामाजिक संरचना व व्यवस्था के अस्तित्व व निरन्तरता के लिए अनिवार्य नहीं होते हैं।

प्रकार्यवादी दृष्टिकोण की उपरोक्त कमियों का उल्लेख करते हुए **मर्टन** ने अपने कुछ आधारों या मान्यताओं को भी प्रस्तुत किया है। वे मान्यताएँ इस प्रकार हैं—(क) प्रकार्यात्मक एकता या संगठन वास्तव में एक प्रयोगसिद्ध या प्रत्यक्षमूलक संगठन है, (ख) सामाजिक रीतियाँ तथा घटनाएँ एक समूह के लिए प्रकार्यात्मक हो सकती हैं जबकि दूसरे समूहों के लिए वही रीतियाँ तथा घटनाएँ अकार्यात्मक हो सकती हैं, (ग) सार्वभौमिक प्रकार्यवाद की धारणा में संशोधन आवश्यक है क्योंकि एक समाज या समूह के जो प्रकार्यात्मक परिणाम हैं, वे दूसरे समाजों या समूहों पर लागू नहीं भी हो सकते हैं, (घ) तत्त्व या इकाई अपरिहार्य है, इस मान्यता का भी प्रकार्यात्मक रूप में संशोधन होना चाहिए क्योंकि एक ही इकाई के एकाधिक प्रकार्य हो सकते हैं और एक ही प्रकार्य की पूर्ति विकल्पों द्वारा भी सम्भव है, एक इकाई-विशेष की प्रकृति को एक विशिष्ट सन्दर्भ में ही समझने का प्रयत्न करना चाहिए और प्रकार्यात्मक विश्लेषण इस बात की माँग करता है कि प्रकार्यों द्वारा सेवित सामाजिक इकाइयों का विशिष्टीकरण या विशेष रूप में स्पष्टीकरण होना चाहिए क्योंकि कुछ इकाइयों के विविध प्रकार्य हो सकते हैं जिनके कुछ परिणाम अकार्यात्मक होते हैं। साथ ही, **मर्टन** ने यह मानने से साफ इन्कार कर दिया कि प्रकार्यात्मक विश्लेषण 'आदर्शात्मक' है।

मर्टन ने प्रकार्यात्मक विश्लेषण के सन्दर्भ में चार अवधारणाओं को विकसित किया है—(1) **प्रकार्य**—प्रकार्य वे निरीक्षित परिणाम हैं जोकि एक व्यवस्था-विशेष के अनुकूलन या सामंजस्य को सम्भव बनाते हैं। (2) **अकार्य**—अकार्य वे निरीक्षित परिणाम हैं जोकि व्यवस्था के अनुकूलन या सामंजस्य को कम करते हैं। (3) **प्रकट प्रकार्य**—प्रकट प्रकार्य वे निरीक्षित परिणाम हैं जोकि व्यवस्था के अनुकूलन या सामंजस्य में अपना योगदान देते हैं और जोकि व्यवस्था में अंशग्रहण करने वालों के द्वारा मान्य तथा इच्छित होते

हैं। (4) **अन्तर्हित प्रकार्य**—अन्तर्हित प्रकार्य न तो मान्य होते हैं और न ही इच्छित। दूसरे शब्दों में, अन्तर्हित प्रकार्य ऐसी स्थिति तथा परिणामों को उत्पन्न करता है जिसके विषय में उस प्रकार्य को करने वाले ने न कभी सोचा था और न ही उसकी इच्छा की थी। अन्तर्हित प्रकार्यों में प्रेरणा, परिस्थिति एवं परिणाम कर्त्ता का जाना-पहचाना नहीं होता। अन्तर्हित प्रकार्य के तो बड़े दूरगामी परिणाम हो सकते हैं जिसकी इच्छा या कल्पना तक उस कर्त्ता ने कार्य को करते समय नहीं की थी। स्मरण रहे कि अन्तर्हित प्रकार्य किसी-न-किसी प्रकट प्रकार्य का ही परिणाम होता है, पर उस परिणाम के सम्बन्ध में कर्त्ता की कोई पूर्वधारणा नहीं होती है और न ही उस परिणाम को प्राप्त करने के उद्देश्य से वह कार्य करता है। यह भी जरूरी नहीं कि अन्तर्हित प्रकार्य का परिणाम बाहरी तौर पर प्रकट ही हो। इसलिए, **मर्टन** के अनुसार, अन्तर्हित प्रकार्य कर्त्ता के लिए न तो मान्य या जाना-पहचाना होता है और न ही इच्छित। कुछ उदाहरणों द्वारा अन्तर्हित प्रकार्य की प्रकृति को स्पष्ट किया जा सकता है—(1) एक व्यक्ति कोई सिनेमा देखने गया, केवल मनोरंजन के उद्देश्य से। उसका यह कार्य प्रकट प्रकार्य है क्योंकि वह प्रकार्य बाहरी तौर पर देखा जा सकता है, मनोरंजन का उद्देश्य कर्त्ता द्वारा इच्छित है और सिनेमा देखने का कार्य का यह परिणाम उसका जाना-पहचाना परिणाम है। पर हो सकता है कि उसी सिनेमा के किसी पात्र के जीवन की कोई घटना उस व्यक्ति को इतना ज्यादा प्रभावित करे कि उसके जीवन-आदर्श को ही बदलकर रख दे जिसके सम्बन्ध में उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था और न ही इस उद्देश्य से वह सिनेमा देखने गया था। सिनेमा देखने के उस कार्य का यही अन्तर्हित प्रकार्य होगा। (2) आप मुँह का स्वाद बदलने के लिए बीच-बीच में करेला खा लेते हैं, पर उस करेले के खाने से आपका कोई शारीरिक रोग जिसके विषय में आप कुछ जानते भी नहीं हैं वह भीतर ही भीतर ठीक हो जाए, और हो सकता है कि आपको न तो रोग के विषय में और न ही उस रोग के ठीक होने के सम्बन्ध में कोई सूचना या ज्ञान हो, तो करेला खाने के प्रकट प्रकार्य का यह अन्तर्हित प्रकार्य ही होगा।

मर्टन ने प्रकट तथा अन्तर्हित प्रकार्यों के बीच पाए जाने वाले **अन्तर** को निम्न आधारों पर महत्त्वपूर्ण माना है—

1. यह अतार्किक दीखने वाले सामाजिक प्रतिमानों के विश्लेषण को स्पष्टता प्रदान करता है—प्रत्येक समाज में अनेक ऐसे सामाजिक व्यवहार या प्रथाएँ मौजूद होती हैं जिनका न केवल प्रकट प्रकार्य होता है अपितु अन्तर्हित प्रकार्य भी हुआ करता है। यदि हम प्रकट तथा अन्तर्हित प्रकार्यों के अन्तर को भली-भाँति पहचान न लें तो ये सभी व्यवहार या प्रथाएँ समाजशास्त्रीय विवेचन से छूट जाएँगी और हमें उनकी वास्तविकताओं के सम्बन्ध में सही ज्ञान प्राप्त न हो सकेगा। अतः प्रकट व अन्तर्हित प्रकार्यों का अन्तर हमारा ध्यान उन प्रकार्यों के प्रति भी आकर्षित करता है जोकि ऊपरी तौर पर दीखने वाले परिणामों को उत्पन्न नहीं करते।

2. यह अन्तर हमारे ध्यान को सैद्धान्तिक रूप से उपयोगी अनुसन्धान के क्षेत्रों

की ओर निर्देशित करता है—प्रकट तथा अन्तर्हित प्रकार्यों के बीच पाए जाने वाले अन्तर के सम्बन्ध में जागरूक रहने पर हमारा अनुसन्धान केवल विषय की ऊपरी सतह तक ही सीमित नहीं रहता, अपितु एक सामाजिक तथ्य के अन्तर्हित प्रकार्यों से उत्पन्न उन विभिन्न क्षेत्रों में भी प्रवेश कर सकता है जिन्हें कि हम प्रायः छोड़ देते हैं या टाल जाते हैं।

3. इसने हमारे सामाजिक ज्ञान में महत्त्वपूर्ण वृद्धि की है–समाज-व्यवस्था की निर्माणक इकाइयों के अन्तर्हित प्रकार्य भी होते हैं यह पता लग जाने से उन प्रकार्यों के सम्बन्ध में जो अनेक अनुसन्धान हुए उनसे समाजशास्त्रीय ज्ञान में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

4. इस अन्तर का एक संरचनात्मक महत्त्व भी है–किसी भी सामाजिक इकाई या संगठन के प्रकट और अन्तर्हित प्रकार्यों को ज़ान लेने से उसकी संरचना की प्रकृति भी हमारे लिए ठीक उसी तरह स्पष्ट हो जाती है, जिस तरह की संरचना की प्रकृति को जान लेने से प्रकार्यों की प्रभावशीलता को जानना सरल हो जाता है। इसे समझाने के लिए **मर्टन** ने राजनीतिक संरचना का उदाहरण दिया है। यदि इस संरचना की विभिन्न इकाइयों के प्रकट या अन्तर्हित प्रकार्यों का हम ठीक से विश्लेषण कर लें तो उस राजनीतिक संरचना की प्रकृति स्वतः ही उभरकर सामने आ जाएगी।